I J R S S I S, Vol. V, Issue (2), May-2017: 1-5 ISSN 2347 – 8268

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES AND INFORMATION STUDIES
© VISHWASHANTI MULTIPURPOSE SOCIETY (Global Peace Multipurpose Society) R. No.MH-659/13(N)
www.vmsindia.org

भारतीय उच्चपदस्थ महिलाएँ : दोहरा संघर्ष

पटोले क.क.
गोपालकृष्ण गोखले महाविद्यालय, कोल्हापूर (म.रा.) भारत
Email: *kalpanapatole707@gmail.com*

सारांश : समाज तथा राष्ट्र के विकास के लिए नारी का सर्वांगिण विकास अत्यंत आवश्यक है। यह विकास शिक्षा के माध्यम से ही किया जा सकता है, इस बात पर बल देते हुए नारी जागरण के प्रारंभिक युग में समाज सुधारकों ने स्त्री–शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। आगे चलकर भारतीय संविधान ने स्वतंत्र भारत के समस्त नागरिकों को समता का अधिकार दे दिया। फलस्वरूप नारी को सभी क्षेत्रों में पुरूष के साथ समान अवसर मिल गए। ''स्वतंत्र भारत में धर्म, राजनीति, अर्थ और समाज की दृष्टि से प्रत्येक मानव का समान मूल्य निर्धारित किया गया और इसी क्रम में नारी का स्वतंत्र और गौरवपूर्ण स्थान स्वीकृत हुआ। नारी पुरूष के समान प्रत्येक क्षेत्र में भाग लेने लगी।'' उसने समान अवसर का लाभ उठाते हुए गृहस्थी के सीमित एवं संकुचित दायरे से निकलकर भारतीय नारी ने उच्च शिक्षा क्षेत्र में कदम रखा और उच्च पद पर कार्यरत हुई। आत्मनिर्भर बनके अपने व्यक्तित्व का विकास वह स्वयं करने लगी। डॉ.हेमेंद्रकुमार पानेरी के मतानुसार, ''परंपरागत ग्रर्हस्थ एवं पतिव्रत के परिवेश में कुंठित नारी उच्चशिक्षा और नारी स्वातंत्र्य के प्रभाव में स्वच्छंद जीवन की ओर अग्रेसर हुई।'' फलस्वरूप आज की शिक्षित नारी घर तथा कायक्षेत्र के दोहरे कार्यभार को सफलता से निभा रही है। किंतु दोहरी जिम्मेदारी से उसका जिवन द्वंद्वग्रस्त बन गया है, ना उसे घर में पति का सहयोग मिलता है, और ना ही कार्यालय में सहकर्मियों का। इसका मूल कारण है, भारतीय पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था। वास्तव में उच्च पदस्थ महिला अधिकारी कार्यकुशल, अनुशासित एवं क्षमतावान होती है, लेकिन पुरूष वर्ग का स्वयं को महिलाओं से श्रेष्ठ मानने का भाव महिलाओं के सामने कई समस्याएँ खडा करता है। ''एक ओर कार्यभार से उपजी थकान तो दूसरी ओर परिवारजनों के ताने उसे सहने पड़ते है। नौकरी करते रहना या चाहकर भी छोड़ न पाने की उसकी विवषता दुहरी है। एक ओर घर की आवश्यकताओं द्वारा प्राप्त मजबूरी है तो दूसरी ओर अपनी शिक्षा और ज्ञान को प्रयोग में ला सकने में आत्मतोष की चाह भी है।'' परिणामस्वरूप उच्च–शिक्षित नारी भी अपने व्यक्तित्व की सार्थकता एवं जीवन की विषमताओं के बीच संघर्षरत दिखाई देती है। अपने दासित्व और पराधीनता के प्रति उसका विद्रोह आज भी जारी है।

बिज शब्द : 'भारतीय संविधान, दोहरा कार्यभार, उच्च पदस्थ, द्वंद्वग्रस्त, आत्मतोष, दोहरा अभिशाप

प्रस्स्तावना :
शिक्षित नारी राष्ट्र की गतिशीलता का प्रतिक होती है। जिस राष्ट्र में शिक्षित महिलाओं की संख्याअधिक होती है वह राष्ट्र सुसंस्कृत माना जाता है। ''नारी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है, समाज की प्रगतिके लिए उसकी प्रगति भी अनिवार्य है।''३ केवल पुरूषों को शिक्षा प्रदान करना और नारी को शिक्षा से वंचितरखना सर्वथा अनुचित है। वास्तव में 'नारी और पुरूष समाजरूपी रथ के दो पहिये होते है। दोनों पहिए आकारमें समान हो, तुल्यबल हो, तब ही रथ उचित गति से आगे बढ़ता है। पुरूष शिक्षित, नारी अशिक्षित रहने से राष्ट्रकी प्रगति नहीं होती है।''४ इसलिए नारी–शिक्षा की अनिवार्यता का समर्थन करते हुए स्वामी विवेकानंद तथाअन्य समाज सुधारकों ने नारी को शिक्षा के लिए प्रेरित किया। नारी ने भी यह महसूस किया कि शिक्षा केवलडिग्री लेने के लिए नहीं होती, बल्कि जीवन निर्माण के लिए भी होती है। इसी कारण वह उच्च शिक्षा हासिलकरने लगी। शिक्षा के बल पर ही आज वह चार दीवारी की कैद से स्वतंत्र होकर पुरूष वर्ग के सामने खड़ीहोने में समर्थ हो गयी। ''स्त्री–पुरूष की अनुकर्ता न होकर, अब अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति भी जागरूक है।आज नारी–आत्मनिर्भर बनकर अपना भाग्य स्वयं निर्धारण में लगी है। वह पुरूष से स्वयं को किसी प्रकार हीनअनुभव नहीं करती। समाज के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में आगे बढ़कर स्त्री ने परंपरागत अबला के मूल्य के स्थान परसबला नारी के मूल्य की प्रतिष्ठा की है।''५ फलस्वरूप आज की उच्चशिक्षित नारी गृहस्थी के साथ–साथ अपनेकार्यालय का दायित्व बड़ी कुशलता से निभा रही है। परंतु भारत में पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था के चलतेअशिक्षा, अज्ञान और दमन के युग से लेकर शिक्षा और जागरण के इस युग में भी वह शोषित दिखाई देती है।''भारत के लोकतांत्रिक

समाज में नारी को कुछ सीमा तक राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकार प्राप्तहुए, फिर भी उसकी मूल स्थिति में विशेष अंतर दिखाई नहीं देता है। आज भी वह पुरूषी दंभ एवं मानसिकताका शिकार हो रही है।''६ स्त्री–पुरूष असमानता के कारण आज उसकी दशा दयनीय है। उच्चशिक्षित,उच्चपदस्थ एवं आत्मनिर्भर होते हुए भी उसे घर तथा दफ्तर में नई–नई समस्याओं का सामना करना पड़ रहाहै। अपने अधिकार एवं अस्मिता की पहचान के लिए वह संघर्ष कर रही है। इसका प्रतिबिंब वर्तमान साहित्य मेंप्रखरता से दिखाई दे रहा है। अतः साहित्य समाज का दर्पण होता है। प्रस्तुत शोधालेख के अन्वेषण हेतु हिंदीउपन्यासों में चित्रित कुछ प्रतिनिधिक उच्च शिक्षित, उच्च पदस्थ महिलाओं के संघर्षमय जीवन को इस विषय मेंसमेटने का प्रयास किया है।

अनुसंधान सामग्री : कोश, संदर्भ ग्रंथ, पत्रिका, उपन्यास, समाचार पत्र।

विमर्श :

शशिप्रभ्भा शास्त्री के 'मीनारें'' उपन्यास की प्रेमा दीवान उच्च–शिक्षा प्राप्त करके कॉलेज की प्रधानाचार्याबनती है। कॉलेज का संपूर्ण दायित्व उस पर है। कॉलेज का प्रशासन सुचारू रूप से निभाने के लिए वहनियोजन आवश्यक समझती है। इसीलिए कॉलेज जाने के पहले वह अपनी डायरी में कार्यों की तालिकालिखकर ले जाती है और उन्हें पूरी निष्ठा से निभाती है। अपना कॉलेज ठीक ढंग से चलाने में वह तत्पर है,परंतु उसे यहाँ पुरूष मानसिकता एवं असमानता का सामना करना पड़ता है। कॉलेज की सारी व्यवस्था प्रबंधकोंके हात में है। उनकी नजर में कॉलेज की प्राचार्या एक नौकर है। वे कॉलेज को शिक्षा का मंदिर न समझकरअपनी आमदनी बढ़ाने का एक माध्यम समझते हैं। ऐसे प्रबंधकों से प्राचार्या प्रेमा दीवान को बार–बार अपमानितहोना पड़ता है। प्रबंधक अपना रोआब दिखाने के लिए प्रेमाजी को भरी सभा में अपमानित करते हैं। वह कॉलेजके एक समारोह में उद्घाटन के लिए खड़ी होती है, उसी समय संस्था के प्रधान महोदय श्री मंगल प्रतापसाहनी मंच पर पहुँचते है और माइक अपने हाथ में लेकर बोलने लगते हैं। और बोलने के बाद प्रेमा कोनजरअंदाज करते हुए यह भी घोषणा करते हैं कि अपने वक्तव्य के बाद मंत्री महोदय भाषण करेंगे। ''प्रेमादीवान का नाम वहाँ कहीं नहीं था, जिनके कंधों पर उस समय पूरी संस्था के संचालन का भार था।''मंत्रीमहोदय कॉलेज का एकाऊटेंट रतनकुमार की सहायता से भवन निर्माण में हजारों रूपयों का घोटाला करता है।वह कॉलेज में प्रिंसिपल द्वारा लिए गये प्रत्येक निर्णय को गलत कहता है और अपने स्वार्थ के लिए उसे तंगकरता है। वाइस चांसलर विश्वा वर्मा भी कूटनीतिज्ञ है, उसको प्राचार्या पर विश्वास नहीं, दफ्तर के लोगों परविश्वास है। चरित्रहीन, भ्रष्टाचारी एकाउटेंट को खुद बचाने की कोशिश करती है। वह प्रेमा दीवान को कॉलेजके किसी भी व्यवहार को निभाने का अधिकार नहीं देती। इसप्रकार उच्चशिक्षित, उच्चपदस्थ प्रधानाचार्य प्रेमादीवान कार्यकुशल एवं कर्तव्यनिष्ठ होते हुए भी शोषण का शिकार बनती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि गैरसरकारी कॉलेजों की व्यवस्था शिक्षा–प्रेमी के हाथ से निकलकर भ्रष्ट, धनलोलुप सेठों के हाथ में चली गयी है। वे चाहतें है कि उनके हुक्म से ही कॉलेज चलता है। सरकार या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्तधनराशि को हड़पना उनके सामान्य व्यवहार बन गये हैं। यदि गलती से प्रधानाचार्य पद पर आदर्शवादी, निष्ठावान, ईमानदार शिक्षा प्रेमी महिला आती है तो उसका शोषण किया जाता है, उसका जीना भी मुश्किल करदिया जाता है। उसके बराबर का पुरूष वर्ग उसे अपमानीत करने, उसको गलत साबित करने में अपना पुरूषार्थ मानता हैं। प्रेमा उच्च पद पर आसीन होने पर भी सुविधाओं से वंचित रहती है। इन सभी समस्याओं का हलकरना किसी भी महिला के लिए साधारण बात नहीं थी। परंतु कर्तव्यनिष्ठ एवं उच्च–शिक्षा से प्रेरित होने केकारण न्याय और ईमानदारी से इन समस्याओं का और कठिनाइयों का निवारण प्रेमा दीवान का मुख्य ध्येय था।

मेहेरून्निसा परवेज के 'अकेला पलाश' उपन्यास की तहमीना उच्चशिक्षित कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी है। वह महिला संगठन की चेयरमैन है। अपने कार्य के प्रति रूचि होने के कारण अपना काम उसे बोझ नहींलगता। वह कार्यतत्पर है लेकिन, ''दफ्तर की पहली भेंट से वह जान जाती है कि उसके अधीनस्थ कर्मचारीचालू है और चापलूसी भी''उसे पता चलता है कि पिछले चेअरमैन ने उन्हें अत्याधिक स्वतंत्रता दी है, इसलिएवे आलसी बन गये हैं। कर्तव्य के प्रति समर्पित तहमीना को ड्राइवर द्वारा सरकारी गाड़ी में पैसे लेकरसवारियों को बैठा लेना। एक ही गाँव में काम करनेवाली शिक्षिकाओं में द्वेष निर्माण करना आदि बातें अच्छीनहीं लगती। वह जब जान जाती है कि टाइपराइटर की चोरी नहीं हुई है। उसे दफ्तर के बाबू ने गायब कियाहै, तहमीना तुरंत अपने अधिकार का प्रयोग करके उसका स्थानांतरण कर देती है। और अन्य कर्मचारियों कोसतर्क रहने के सुझाव देती है। अधिकारी होने के नाते वह शिबिरों का आयोजन करके गाँव की महिलाओं कोवैज्ञानिक एवं पारिवारिक जीवन विषयी अधिकाधिक जानकारी देती है। इन शिबिरो में सोलह साल से ऊपर कीलड़कियों को भरती करना चाहिए था परंतु उसकी सहाय्यिका मिसेज खेतान ने छोटी–छोटी लड़कियों को भरतीकर लिया था। उसकी इस लापरवाही पर पीड़ा व्यक्त करते हुए, तहमीना उसे डाँटती है कि, ''सरकारी पैसाबेजरूरत खर्च करने के लिए तो नहीं है।''९ उसकी दृष्टि से शिबिरों का आयोजन केवल

कागजपत्रों तक सीमितनहीं है। इससे जनता का उपयोग होना चाहिए। उसके लिए चाय का इंतजाम करने चली गई शिक्षिका से वहकहती है कि, ''अपनी ड्यूटी छोड़कर चाय का इंतजाम करने क्यों गयी है? मैंने चाय पीया यह जरूरी तोनहीं।''कार्यतत्पर तहमीना अपने कर्मचारियों से निश्चित दूरी पर रहकर उनके सुख–दुःख में भी भागी होतीहै। उसमें क्षमा करने का गुण है इसलिए दुलारी, विमला, मिसेज खेतान आदि की करूण कथा सुनकर उनकेदंड क्षमा कर देती है। उन्हें सहाय करने का आश्वासन देती है। उसके इस स्वभाव के कारण कर्मचारियों कीदृष्टि से वह एक कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी बन जाती है।उच्च–शिक्षित तहमीना बड़ी निष्ठा और ईमानदारी से अधिकारी के रूप में अपना दायित्व निभाती हैपरंतु संदेही वृत्ति का उसका पति जमशेद घर के कामकाज में सहयोग देना तो दूर, किसी बात के लिएसमझौता भी, करने लिए तैयार नहीं होता। पुरूष का अहंकार स्त्री की सफलता, और अधीनस्थता को स्वीकारनहीं करता। इसी अहंकार की वजह से जमशेद उच्चपदस्थ पत्नी को केवल दासी मानता है और उसकाबार–बार अपमान करता है। अपेक्षाओं की पूर्ति न होने पर उसे पीड़ा पहुँचाता है। ''जमशेद न तो उसका खानेमें साथ देता है और न चाय में। परिस्थिति कैसी भी हो उसे ग्यारह बजे खाना चाहिए ही।'' वह घर केकामकाज में हाथ बँटाना तो दूर घुमने फिरने में भी पत्नी का साथ नहीं देता। तहमीना को पति की बेरूखी कोझेलना पड़ता है। घर तथा दफ्तर के दोहरे कार्यभार की थकान से तहमीना टूटने लगती है, जिंदगी इस तरहमशीन हो जाएगी, उसने कहाँ सोचा था? उच्चशिक्षित अधिकारी होकर भी उसे घर तथा दफ्तर में समानता काअधिकार नहीं मिलता। फिर भी उसमें मानसिक दृढ़ता एवं आत्मविश्वास के दर्शन होते है, जिसके कारण वह
जन्मजात संस्कारों से अलग नहीं हो पाती। पति के अन्याय–अत्याचार को सहते हुए 'अकेला पलाश' बनकरअपने बच्चों के लिए उसी जीवन को स्वीकार करती है। अत: घर तथा कार्यालय के दोहरे संघर्ष के लिए वहअभिशप्त है।

नासिरा शर्मा के 'शाल्मली' उपन्यास की शाल्मली के माता–पिता ने उसे बेटी नहीं बल्कि बेटासमझकर उसके व्यक्तित्व का निर्माण पूरी सजगता से किया था। शाल्मली भी अपनी योग्यता, प्रतिभा एवंबौध्दिकता के बल पर उच्चशिक्षा हासिल करके उच्च पदस्थ अधिकारी बनती है। उसने शादी के पहले ही संघ,लोकसेवा आयोग की परीक्षा दी थी। शादी के बाद नतिजा निकलता है और वह उत्तीर्ण हो जाती है। पतिनरेश की सहमति से इंटरव्ह्यू देती है, उसका चयन आई.ए.एस. अधिकारी के रूप में होता है। वह घर तथाऑफिस के दायित्वों को अत्यंत सुचारू रूप से निभाती है, परंतु कुछ ही दिनों में उसके पति में पुरूष का अहंतथा पत्नी की उच्च पदस्थता के प्रति ईर्ष्या का भाव जगता है। वह अपनी पत्नी पर अपना शिकंजा कसकेदुनिया को अपना प्रभुत्व दिखाना चाहता है। वह एक साधारण मानसिकता और औसत सांस्कृतिक स्तर कासेक्शन ऑफिसर है। आई.ए.एस. अफसर बनी पत्नी को अपने आदेशों का पालन करने के लिए कहता है, ''मैंनेजो कह दिया, उसका पालन तुमको करना है, बस!...... पति का अधिकार केवल धर्मग्रंथों में नहीं लिखा, तुम्हारेसंविधान में उस सरकार द्वारा लिखा गया है, जिसकी चाकरी करती हो तुम?''११ पत्नी को मिली सफलता सेकुंठाग्रस्त होकर नरेश शराब और पर–स्त्री जैसी बुराइयों को भी अपनाता है। परिणामस्वरूप पति की असहयोगभावना के कारण उच्चशिक्षित शाल्मली का जीवन तनाव एवं घुटन से भर जाता है। फिर भी उदारमना एवंविवेकशील शाल्मली इस समस्या का समाधान तलाक में नहीं मानती। वह कहती है कि, ''औरतों के पास दो हीअभिव्यक्तियाँ है या तो सर झुका देना या समस्या को अधुरा छोड़ सर कटवा लेना। मेरा विश्वास न घर छोड़नेपर है, न तोड़ने पर है, न आत्महत्या पर है, न अपने को किसी एक के लिए स्वाहा करने में है। मैं तो घर के
साथ औरत के अधिकार की कल्पना भी करती हूँ और विश्वास भी।''१२ वह अपनी विस्तृत दृष्टि को संकुचितहोने नहीं देती बल्कि पति के साथ उसका संघर्ष आजीवन जारी है। उच्च शिक्षा एवं आत्मविश्वास से प्रेरितनारी संघर्ष का एक नया रूप लेखिका ने यहाँ प्रस्तुत किया है। शाल्मली को अपनी अस्मिता की पहचान एवंअपने अधिकार के लिए घर तथा दफ्तर में भी संघर्ष करना पडता है।नासिरा शर्मा का दूसरा उपन्यास है 'ठीकरे की मंगंगनी' जो मुस्लिम समाज में स्त्री के रूढिवादी परिवेशसे किए गए संघर्ष को प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका महरूख प्रधानाध्यापिका है। उच्चशिक्षितमहरूख की मंगनी परंपरागत रूढि के अनुसार एक अंधविश्वास के तहत जन्म होते ही रफत से कर दी जातीहै, जिसके कारण उसे अपना जीवनसाथी चुनने का कोई विकल्प नहीं रह जाता। वह इस स्थिती को स्वीकारभी कर लेती है। परंतु उसका मंगेतर रफत स्कॉलरशिप लेकर उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जाता है, जहाँ परवह एक विदेशी लडकी से शादी करता है। स्वदेश लौटकर महरूख से भी वह शादी करना चाहता है। परिवारके सभी सदस्य इसके लिए तैयार होते है। महरूख की शैशवकालीन मंगनी को परिवारवाले विवाह का रूप देनाचाहते है। परंतु महरूख रफत के इस अपमान एवं अन्यायपूर्ण प्रस्ताव को ठुकरा देती है। दोनों के परंपरागतखानदान में यह हादसा जितना शर्मनाक था, उतना ही हैरतंगेज भी की औरत मर्द को ठुकरा दे? परंतु महरूखको अपने निर्णय पर गर्व था। जब रफत उस पर अपना हक जताना चाहता है तो वह कहती है, ''मैंठोसजमीनपर ठोस जिंदगी जीना

चाहती हूँ। मेरी जिंदगी पर सिर्फ मेरा हक्क है।''[१३] इस प्रकार महरूख का आहतस्वाभिमान यहाँ से अपने लिए एक नई दिशा चुनता है। वह एक छोटे से गाँव में प्रधानाध्यापिका बनकर पढानेचली जाती है और अविवाहीत रहकर जनकल्याण के लिए जुट जाती है। उसकी लढाई सिर्फ पारिवारिकपरिवेश में ही खत्म नहीं होती। उसे बाहर भी संघर्ष करना पडता है। महरूख के अच्छे कार्य से गाँववालेअनपढ़ होते हुए भी उसका सन्मान करते है। परंतु उसी के बराबर का शिक्षित पुरूष वर्ग उस पर झूठा इल्जामलगा कर चरित्रहीन बनाने का प्रयास करता है। परंतु वह निडरता से इन सबका सामना करती है। जमींदारऔर तहसिलदार द्वारा किए जानेवाले ग्रामवासियों के शोषण का भी वह विरोध करती है। महरूख की कथा सेयह सिध्द् होता है कि, मुक्ति की लढाई स्त्री को अकेले ही लढ़नी है, चाहे वह समाज से हो, परिवार से हो, यारूढीयों से हो। लेखिका ने परंपरागत रूढियाँ, धार्मिक बंधन आदि के कारण होनेवाले नारी शोषण के खिलाफआवाज उठाई है। महरूख की कथा परंपरागत रूढियों से मुक्ति पाने की तलाश को सही दिशा प्रदान करतीहै। अत: यह स्पष्ट है की, इक्कीसवी शती की उच्चशिक्षित, उच्चपदस्थ नारी भी अपने व्यक्तित्व की सार्थकताके लिए संघर्षरत दिखाई देती है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि, बीसवीं सदी के पूर्वार्ध को महिला जागरण युगतथा उत्तरार्ध को महिला प्रगति का युग कहा जा सकता है। भारतीय संविधान ने नारी को शिक्षा में समानताएवं स्वतंत्रता का अधिकार तो दे दिया, परंतु कुछ अपवाद छोड़कर आज भी ऐसा माना जाता है कि स्त्रियों कीशिक्षा, या तो फैशन का अंग है या सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न, या फिर विवाह के लिए वर जुटाने का साधन।भारतीय पुरूष—प्रधान व्यवस्था के चलते आज उच्चशिक्षित, उच्चपदस्थ नारी भी शोषित व पीड़ित दिखाई देतीहै। विवेच्य महिला उपन्यासकारों ने अपनी रचनाओ में उच्च—शिक्षा हासिल करके विविध क्षेत्रों में उच्च पद परकार्यरत महिलाओं के दोहरे संघर्ष को अभिव्यक्त किया है। इनके अध्ययन से स्पष्ट होता है की, नारी कितनाभी पढ़ लिखकर आगे बढ़े, समाज में अब भी वह दोयम दर्जे की नागरिक है, उसका संपूर्ण जीवन, पुरूष सापेक्षही निर्धारित है। कुछ क्षेत्रों मे पुरूष के समान तथा कुछ क्षेत्रों में पुरूष से भी आगे बढ़कर वह कुशलता सेअपना दायित्व निभा रही है, परंतु कहीं भी उसे समान अवसर नहीं मिल रहे है। उसे कदम—कदम परअसमानता एवं लिंगभेद का सामना करना पडता है। विवेच्य उपन्यासकारों ने इसका चित्रण यथार्थ के धरातलपर प्रस्तुत किया है।आज दुनियाभर में ८ मार्च को 'महिला दिन' मनाया जाता है, यह बुलन्द करने के लिए कि वह समानदर्जे की हकदार है। फिर भी उसे अपनी अस्मिता की पहचान एवं समान अधिकारों की माँग के लिए संघर्षकरना पड़ता है। पुरूषों पर आर्थिक निर्भरता, संयुक्त परिवार, वैवाहिक कुरीतियाँ, परंपरागत रूढ़ियाँ, कर्मकांड,अशिक्षा आदि के कारण सदियों से नारी पुरूषों के अत्याचार को झेलने के लिए विवश है। पुरूष वर्चस्व केकारण वह शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर शोषण का शिकार हुई है। शिक्षित हो या अशिक्षित शोषणनारी जाति की नियती है। घर, परिवार, कार्यालय, आश्रम सभी जगह नारी सदैव पुरूष के शोषण का शिकारहुई है। नारी सुधार आंदोलन तथा शिक्षा के प्रचार—प्रसार के फलस्वरूप वर्तमान युग में नारी की स्थिति मेंजरूर परिवर्तन हुए हैं। परंतु सच यह है कि, शिक्षित एवं आत्मनिर्भर होते हुए भी आज परिवार तथा समाज मेंउसका स्थान निम्न ही पाया जाता है। जागरण के इस युग में भी उसे केवल उपभोग की वस्तु माना जाता है।उसके जीवन के लिए यह दोहरा अभिशाप है।पुरूष प्रधान सभी क्षेत्रों में समान संधी का लाभ लेकर आज की नारी वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर,तकनीशियन, वाइस चांन्सलर, अकौंटंट, बिजनेस मैनेजर आदि बनती है और घर तथा कार्यक्षेत्र के दोहरेकार्यभार को सफलता से निभा रही है। किंतु दोहरी जिम्मेदारी से उसका जिवन द्वंद्वग्रस्त बन गया है, ना उसे

घर में पति का सहयोग मिलता है, और ना ही कार्यालय में सहकर्मियों का। वास्तव में उच्च पदस्थ महिलाअधिकारी अधिक योग्य, कार्यकुशल, अनुशासित एवं क्षमतावान होती है, लेकिन पुरूष वर्ग का स्वयं को नारी सेश्रेष्ठ मानने का भाव महिलाओं के सामने कई समस्याएँ खड़ा करता है। परिणामस्वरूप नारी अपने व्यक्तित्व कीसार्थकता एवं जीवन की विषमताओं के प्रति संघर्षरत दिखाई देती है। आज भी अपने दासित्व और पराधीनताके प्रति उसका विद्रोह जारी है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि, उच्चशिक्षित कार्यशील नारी की निष्ठाकिसी भी अर्थ में पुरूष से कम नहीं है। इसलिए पुरूष—प्रधान समाज को अपनी सोच और मानसिकता मेंपरिवर्तन करना होगा और पुरानी परंपराओं तथा रूढ़िवाद की कट्टरता से नारी को मुक्त करके स्वतंत्रता एवंसमानता का अधिकार देकर उसे प्रगति के अवसर प्रदान करने होंगे। क्योंकि, नारी राष्ट्र की गतिशीलता काप्रतिक है। सुदृढ समाज तथा समृध्द राष्ट्र के लिए नारी का सर्वांगिण विकास अनिवार्य है।

संदर्भ सूची :

१. डॉ.हेमेंद्रकुमार पानेरी, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास : मूल्य संक्रमण, पृ.७४।

२. रामदास मिश्रा और नरेंद्र मोहन, हिंदी कहानी दो दशकों की यात्रा, पृ.९८।

३. डॉ.कल्पना पाटोळे, महिला उपन्यासकार : पारिवारिक जीवन के बदलते संदर्भ, पृ.१७६।

४. डॉ.सुलोचना देशपांडे, भारतीय समाज में कार्यशील महिलाएँ, पृ.१४१।
५. आलोचना (पत्रिका) जुलाई—सितंबर, १९७२, पृ. ६४।
६. डॉ.कल्पना पाटोळे, महिला उपन्यासकार : पारिवारिक जीवन के बदलते संदर्भ, पृ.१२६।
७. शशिप्रभा शास्त्री, मीनारें, पृ.१२।
८. वही, पृ.२६ ।
९. मेहरून्निसा परवेज, अकेला पलाश, पृ. ४०।
१०. वही, पृ. ५४।
११. नासिरा शर्मा, शाल्मली, पृ.१२८।
१२. वही, पृ.१६४।
१३. नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी, पृ.११८।

****